E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

बलिया जनपद (उ0 प्र0) में सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप

विनीत कुमार गुप्ता [1], डॉ0 शिव प्रसाद [2]

[1] शोध छात्र, भूगोल विभाग, सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया

[2] विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया

शोध सारांश :–

भूमि उपयोग का अध्ययन एक उपयोगी प्रक्रिया है जिसमें किसी क्षेत्र में पायी जाने वाली भूमि के अनुकूलतम उपयोग की प्रायोजना निर्मित की जाती है, जिससे मानव समाज को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। इसमें यह भी अनुशीलन किया जाता है कि ऊसर एवं बंजर भूमि तथा कृषि अयोग्य भूमि को कैसे कृषि योग्यभूमि के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है स्वाभाविक है कि इससे फसलोत्पादन का परिक्षेत्र बढ़ेगा जिससे खाद्य संसाधन की दृष्टि से क्षेत्र स्वावलम्बी बनेगा। भारत में अपनायी गई चकबन्दी, भूमि उपयोग नियोजन से सम्बन्धित एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न उपयोग वाली भूमियों को जो अलग–अलग Patches के रूप में पायी जाती है, उन्हें एक स्थान पर परिसीमित करना तथा कृषित भूमि के अन्तर्गत अवस्थित छोटे जोतों के खेतों कोएक साथ सम्बद्ध करना जिससे उसमें किसानों के द्वारा सिंचाई, फसल संरक्षण एवं अन्य नवाचार सम्बन्धी प्रयोग किये जा सकें। बलिया जनपद के सन्दर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि यहॉ वनोद्यान एवं चारागाह कुल प्रतिवेदित भूमि के 1.57 प्रतिशत परिक्षेत्र पर पायी जाती है, जो उचित नहीं है क्योंकि मैदानी परिक्षेत्र में न्यूनतम 10 प्रतिशत क्षेत्र वनोंउद्यान, बाग के अर्न्तगत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त न्यूनतम 5 प्रतिशत भाग चारागाह के रूप में होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है जनपद के कुल प्रतिवेदित भूमि के 8.16 प्रतिशत परिक्षेत्र पर कृषि योग्य बंजर एवं परती भूमि व 18.29 प्रतिशत परिक्षेत्र पर अकृष्य क्षेत्र एवं 71.38 प्रतिशत परिक्षेत्र पर कृषिकृत भूमि पायी जाती है।

मुख्य शब्द– भूमि उपयोग, बंजर भूमि, चारागाह, वनोद्ययान, अकृषित भूमि, भूमि संसाधन, कृषिगत भूमि, परतीभूमि, विकासखण्ड, अनुकूलतम उपयोग।

प्रस्तावना

भूमि संसाधन, धरातल पर मनुष्य द्वारा किये गये सभी विकास कार्यो को अपने में समाहित करता है। भूमि पर मनुष्य द्वारा विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप किये जाते है, जिसमें वन एवं चारागाह, कृष्य बंजर, परती(Fallow) भूमि, ऊसर एवं बंजर (barren) एवं चारागाह, उद्यान एवं बागवानी एवं शुद्ध कृषित भूमि सम्मिलित होती है। सम्प्रति भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनशील पक्ष है, क्योंकि प्रारम्भिक काल से यह मानव प्रविधि विकास क्रम के अनुसार परिवर्तित होता गया। वर्तमान में व्यावसायिक क्रियाकलापों में निरन्तर वृद्धि से भूमि उपयोग प्रतिरूप में भी परिवर्तन आना प्रारम्भ हुआ है

फाक्स के अनुसार– Land utilization is theprocess of exploiting the land recourse that is applied to specific objectives, अर्थात भूमि उपयोग, भूमि संसाधनकी एक शोषण प्रक्रियाा है जिसमें भूमि का व्यावहारिक प्रयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता हैा। डी0एस0 चौहान[1](1966) के अनुसार प्राकृतिक वातावरण में भूमि उपयोग एक तत्सामयिक प्रक्रिया है जबकि मानवीय इच्छाओं के अनुरूप उपयोग एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। वारला[2] (1954) ने भूमि संसाधन के औचित्यपूर्ण उपयोग का समर्थन करते हुए इसे भूमि समस्या एवं नियोजन संबन्धी विवेचना का महत्वपूर्ण अंग माना है। भूमि संसाधन उपयोग, भूमि समस्या एवं उसके नियोजन सम्बन्धि विवेचना की धुरी है।[3] कैरियल[4] (1972) ने भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग, भूमि संसाधन उपयोग को कृषि विकास की तीन क्रमिक अवस्थाओं से सम्बन्धित कहा है। सिंह[5] (1979) द्वारा प्रस्तावित सारणी में भूमि संसाधन उपयोग को कृषि विकास की चौथी (व्यापारिक कृषि) अवस्था स्वीकार किया है। भूगोल में भूमि उपयोग के अध्ययन को वास्तविक एवं व्यावहारिक महत्व डडले स्टैम्पे[6] (1931) के ग्रेट ब्रिटेन में भूमि उपयोग सर्वेक्षण से प्राप्त होता है। भारतीय संदर्भ में शफी[7] (1960) तथा भाटिया[8] (1965) के कार्य मौलिक माने जाते है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है।

1. अध्ययन क्षेत्र के सामान्य भूमि उपयोग का विस्तृत अध्ययन करना।
2. अध्ययन के आधार पर भूमि उपयोग आयोजना कर इसके द्वारा रोजगार की संभावना तलाशना।
3. भूमि के दुरूपयोग को नियन्त्रित करना।
4. कृषि क्षेत्र पर निरन्तर बढ़ रहे जनसंख्या दबाव को कम करना।
5. प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग के प्रति लोगो में जागरूकता पैदा करना।

अध्ययन क्षेत्र :–

बलिया जनपद उत्तर प्रदेश के अंतिम पूर्वी छोर पर आज़मगढ़ मण्डल के अर्न्तगत निचलीगंगा–घाघरा दोआब में $25^0$33′ उत्तरी अक्षांश से $26^0$11′ उत्तरी अक्षांश एवं $83^0$28′ पूर्वी देशान्तर से $84^0$39′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2981 वर्ग किमी0 है। इसकी पूरब–पश्चिम लंबाई 73 किमी0 एवं पश्चिम में अधिकतम चाड़ैाई 50 किमी0 है जो पूरब में शून्यहो जाता है। इस प्रकार इस जनपद का स्वरूप त्रिभुजाकार है। जिसके उत्तरी सीमा पर घाघरा नदी, दक्षिणी सीमा पर गंगा एवं पश्चिमी सीमा के कुछ भागों पर छोटी सरयू (टौंस) नदी प्रवाहित होती है। इन नदियों के कारण इस जनपदकी सीमा रेखा काफी टेढ़ी मेढ़ी हो गई है, क्योंकि सीमांकन प्रायः नदियो की धारा के आधार पर ही हुआ है। इसके उत्तरी पूर्वी भाग एवं दक्षिणी पूर्वी भाग पर बिहार राज्य के क्रमशः सीवान तथा सारण (छपरा) एवं बक्सर तथा भोजपुर जनपद की सीमाएँ मिलती हैं, जबकि उत्तरी एवं पश्चिमी भाग पर क्रमशः देवरिया व गाजीपुर एवं मऊ जनपद (उ0प्र0) की सीमाएँ मिलती हैं (मानचित्र सं0 1)।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से इस जनपद को छः तहसीलों बलिया, रसड़ा, बाँसडीह, बैरिया, सिकन्दरपुर, बेल्थरारोड व 17 विकासखण्डों, 163 न्यायपंचायतों व 820 ग्रामसभाओं में विभक्त किया गया है। कुल गाँवों की संख्या 2339 है जिसमें 1791 आबाद व 548 गैर आबाद हैं एवं नगरीय केन्द्रों की सख्या 11 है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार बलिया जनपद की कुल जनसंख्या 3239774 है जिनमें ग्रामीण 2935665 (90.61प्रतिशत) व नगरीय 304109 (9.39 प्रतिशत) है। जनपद का जनघनत्व 1087 व साक्षरता 81.49 प्रतिशत है।

आंकड़ो का स्रोत एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि तन्त्रों का प्रयोग करते हुऐ द्वितीयक स्रोत्रो (सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बलिया 2017) से प्राप्त आंकडों का प्रयोग किया गया है जिसमें सांख्यिकी विधियों का विश्लेषण कर भूमि उपयोग का अंकन किया गया है अध्ययन को और सुस्पष्ट करने हेतु तालिकाओं व मानचित्रों का भी यथास्थान प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप–

प्रकृति द्वारा दिये गये उपहारों में भूमि एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। भूमि का आशय स्थान से है। भूमि उपयोग प्रतिरूप किसी क्षेत्र के स्थलाकृति, मिट्टी, जलवायु, मानवीय क्रियाओं एवं विकसित प्रौद्योगिकी आदि का प्रतिफल है। भूमि उपयोग प्रतिरूप से आशय किसी क्षेत्र की समस्त भूमि किन–किन कार्यों में उपयोग हो रही है, से लगाया जाता है। मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक विकास में भूमि की उपयोगिता अनेक रूपों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भूमि उपयोग प्रतिरूप का विश्लेषण वन, परती भूमि, बंजर भूमि, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि चारागाह, उद्यान, कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त की गयी भूमि आदि वर्गो में किया जाता है। प्रो0 एम0 शफी ने सन् 1962–72 ई0 के दशक में भारत के विभिन्न प्रान्तों की भूमि उपयोगिता तथा भूमि संरक्षण पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

भूमि का मूल्यांकन उनकी गुणवत्ता के आधार पर की जाती है। एक आदर्श भूमि उपयोग हेतु यह आवश्यक है कि विभिन्न भागों के भूमि उपयोग की एक बेहतर समीक्षा व विवेचना की जाय, ताकि ग्रामीण विकास एवं सामाजिक आर्थिक रूपान्तरण के लिए समुचित स्वरूप प्रयुक्त किया जा सके। बढ़ते हुए जनसंख्या के कारण खाद्यान्नों की मांग भी तेजी से

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

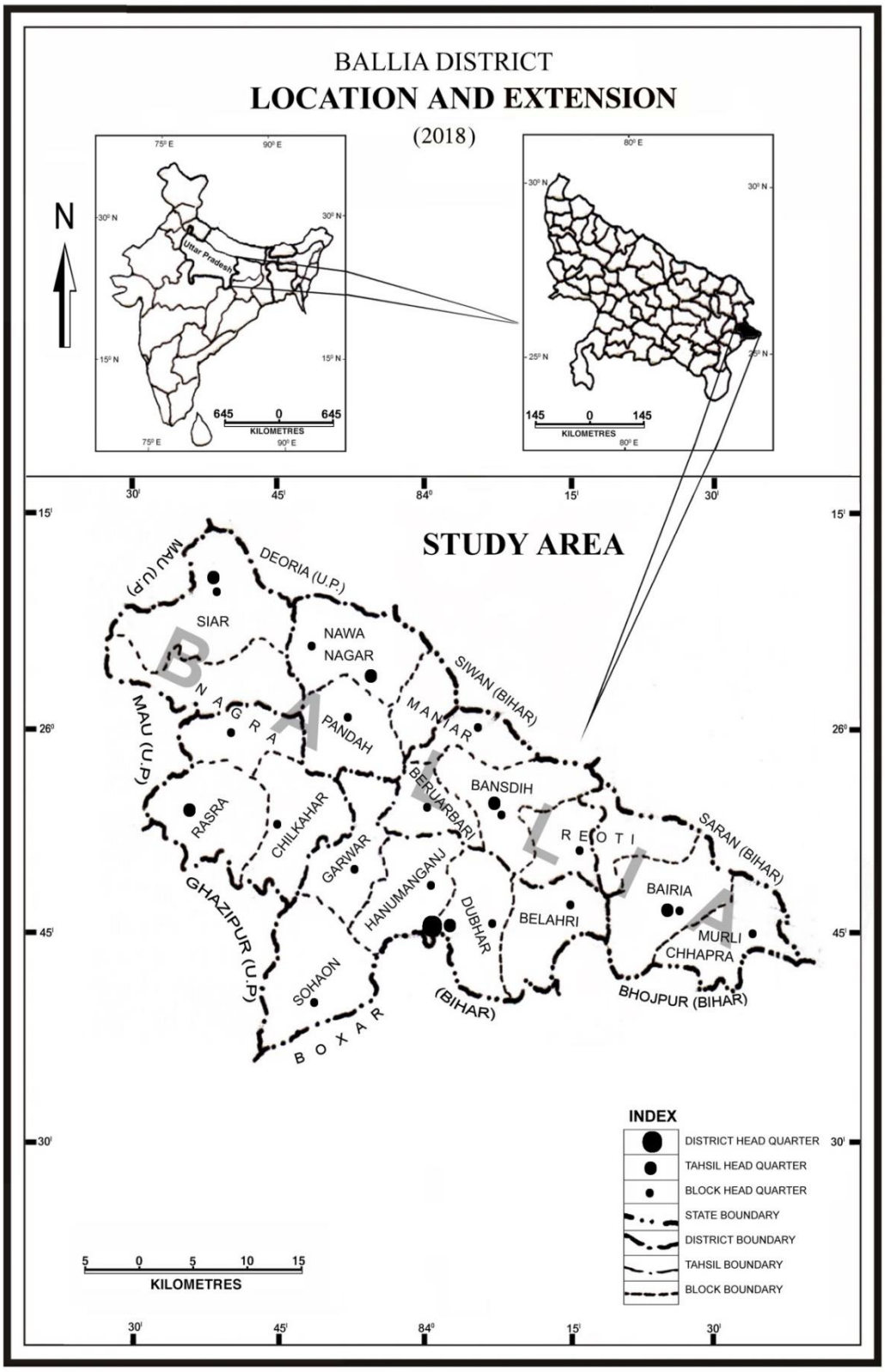

Fig.1

बढ़ रही है। परिणामस्वरूप उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास ने भूमि उपयोग प्रतिरूप में निरन्तर परिवर्तन जारी रखा है।

यहॉ यह उल्लेखनीय है कि जनपद की 84.66 प्रतिशत शुद्ध कृषित भूमि सिंचित है तथा दो फसली भूमिका प्रतिशत 59.46 है। किसी क्षेत्र के शुद्ध कृषित क्षेत्र में सिंचित भूमि के आधार पर ही फसली भूमि में वृद्धि होती है, जिसका फसलोत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तालिका सं0 1 व मानचित्र सं0 2 से स्पष्ट है कि जनपद में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 299265 हेक्टयर है, जिससे 71.39 प्रतिशत भाग पर कृषि कार्य किया जाता है, जबकि 0.40 प्रतिशत भाग बंजर भूमि है वर्तमान परती एवं अन्य परती का भाग क्रमशः 6.12 एवं 1.64 प्रतिशत है। क्षेत्र के 3.13 प्रतिशत भाग पर ऊसर एवं कृषि के अयोग्य क्षेत्र का विस्तार है कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में 15.76 प्रतिशत भूमि सलंग्न है। उद्यान वृक्षों एवं झाड़ियों के अर्न्तगत 1.51 प्रतिशत भूमि है, जो मात्रा एवं उपयोग की दृष्टि से नगण्य है। तालिका सं0 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बंजर भूमि, वर्तमान परती एवं अन्य परती के अर्न्तगत कुल 8.16 प्रतिशत भूमि है। जिसे उपचारित कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

तालिका सं0– 1

बलिया जनपद भूमि उपयोग प्रतिरूप (2016–2017)

क्रम सं0	भूमि उपयोग प्रतिरूप	क्षेत्रफल (वर्ग हे0 में)	प्रतिशत में
1	शुद्ध कृषि क्षेत्र	2136.35	71.39
2	वन	0.81	0.03
3	कृष्य बेकार भूमि बंजर	11.88	0.40
4	वर्तमान परती	183.27	6.12
5	अन्य परती	49.11	1.64
6	उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	93.53	3.13
7	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	471.52	15.76
8	चारागाह	0.98	0.03
9	उद्यान, वृक्षों एवं झाड़ियां	45.20	1.51
योग जनपद		2992.65	100.00

स्रोतः– सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बलिया 2018 के आधार पर शोधार्थी द्वारा अगणित

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

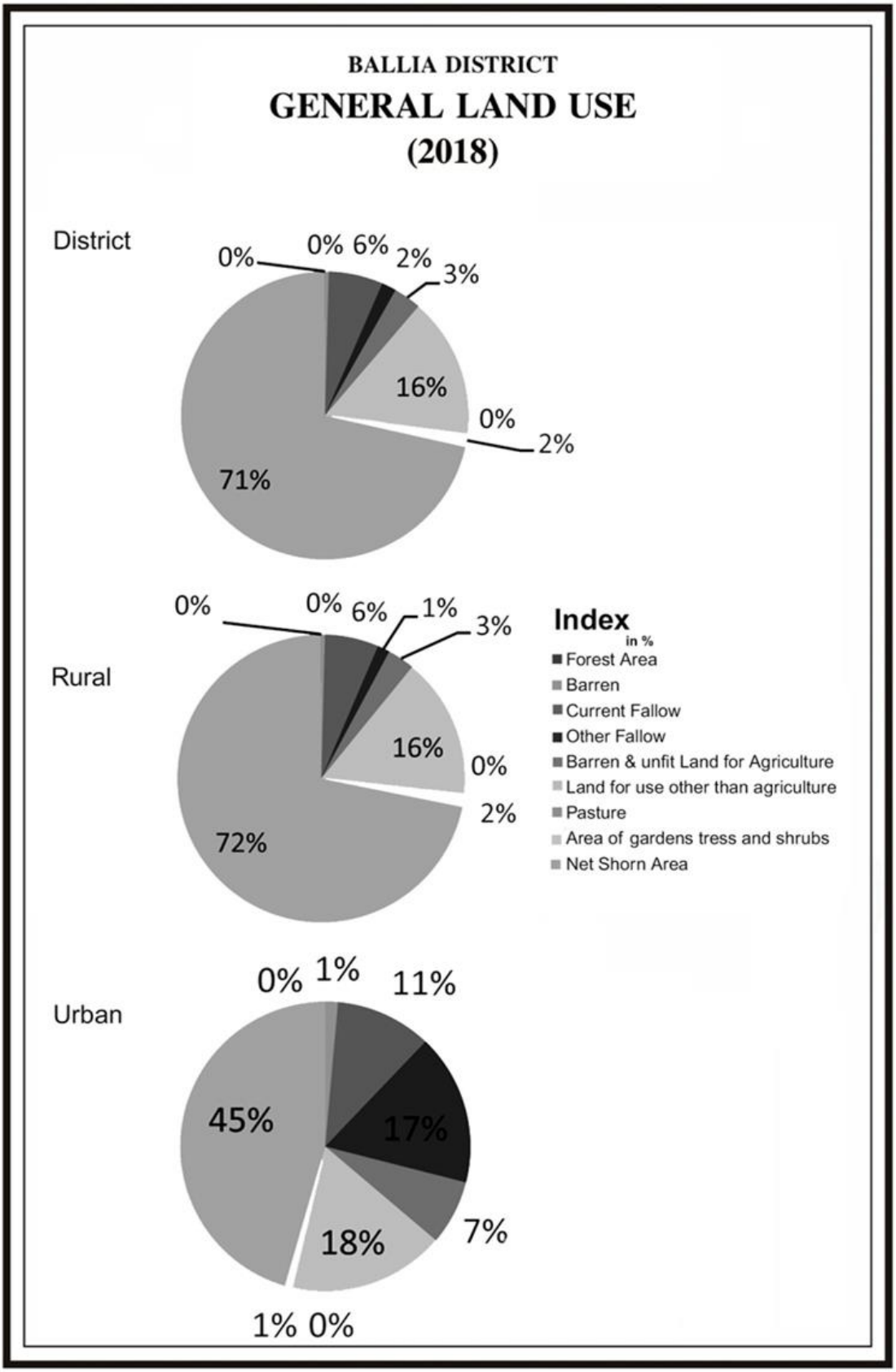

Fig. 2

भूमि उपयोग के क्षेत्रीय प्रतिरूप के अध्ययन हेतु विकासखण्ड स्तर पर विभिन्न उपयोग में आने वाली भूमि का क्षेत्रफल निम्न तालिका स0 2 में प्रदर्शित कियागया है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 71.84 प्रतिशत हैं, जबकि नगरीय परिक्षेत्र में यह 45.57 प्रतिशत है । इस प्रकार कुल 71. 38प्रतिशत भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है । भूमि उपयोग की दृष्टि से इस क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योकि कृषि सम्बन्धी उत्पादनोंपर ही लोगों की आजीविका निर्भर करती है शुद्ध बोये गये क्षेत्र के पश्चात कृष्येतर अन्य उपयोग के अर्न्तगत 8.16 प्रतिशत भूमि संलग्न है। तृतीय स्थान पर वर्तमान परती के अन्तर्गत कुल 6.12 प्रतिशत भूमि है, जबकि चतुर्थ क्रम पर ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि आती है जिसमें 3.13 प्रतिशत भूमि संलग्न है पंचम स्थान पर अन्य परती की भूमि है, जिसमें मात्र 1.64 प्रतिशत भूमि सलंग्न है। अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण व नगरीय तथा जनपदीय भूमि उपयाग को तालिका सं0 2 व मानचित्र सं0 2 में प्रदर्शित किया गया है।

विकास खण्डवार सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप–

आधुनिक वैज्ञानिक युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु नित नये तकनीकी ज्ञान एवं संयंत्रों की खोज एवं विकास किया जा रहा है। भूमि उपयोग भी इस प्रकार की उपलब्धियों से पूर्णरूपेण प्रभावित है। जनपद के भूमि उपयोग प्रतिरूप को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने के लिए सन् 2016–17 के अनुसार विकास खण्डवार भूमि भूमि उपयोग प्रतिरूप का विवरण तालिका संख्या 2 व मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

बलिया जनपद निचले गंगा–घाघरा दोआब में स्थित एक समतल मैदानी भाग है, जिसमें उपजाऊ दोमट मिट्टी का निक्षेप होने के कारण कृषि कार्य हेतु बहुत ही अनुकूल है, यहाँ के भूमि उपयोग पर सामाजिक–आर्थिक व प्राकृतिक कारको का प्रभाव पड़ा है। इसी तरह भूमि की उपयोगिता पर धरातलीय दशा–जलवायु, मिट्टी, वनस्पति आदि कारको के साथ मानवीय क्रियाकलापों का भी अधिक प्रभाव पड़ा है। जनपद के विकास खण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप को तालिका सं0 2 व मानचित्र संख्या 3 के आधार पर निम्न प्रमुख संवर्गों का वर्णन निम्नवत है–

1. कृषि योग्य बंजर व परती भूमि–

इसके अन्तर्गत ऐसी भूमि सम्मिलित है जो कि बंजर एवं परती होने के बावजूद कृषि कार्य हेतु उपयोग में लायी जा सकती है, लेकिन वर्तमान में इसमें कृषि कार्य नहीं किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में इसका हिस्सा कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के 7.80 प्रतिशत है। इसमें भी बहुत अधिक क्षेत्रीय भिन्नता विद्यमान है। इसका सर्वाधिक प्रतिशत 23.47 प्रतिशत बेलहरी विकास खण्ड एवं

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

तालिका संख्या–4.2
जनपद बलिया : विकास खण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (प्रतिशत में) सन् 2015–16

क्र. सं.	विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हे0 में)	कृषि योग्य बंजर एव परती भूमि				वनोद्यान एवं चारागाह			अकृष्य क्षेत्र			कृषि कृत भूमि शुद्ध बोया गया क्षेत्र
			बंजर	वर्तमान परती	अन्य परती	योग	वनोद्यान	चारागाह	योग	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	योग	
1.	सियर	22507	0.42	2.88	0.92	4.22	0.02	0.91	0.93	1.67	14.31	15.98	78.87
2.	नगरा	28608	0.31	3.62	1.13	5.06	1.86	0.06	1.92	3.00	13.40	16.40	76.62
3.	रसड़ा	19141	0.36	2.90	1.01	4.27	1.24	0.09	1.33	3.70	12.41	16.11	78.29
4.	चिलकहर	18447	0.27	2.24	0.95	3.46	1.37	0.17	1.54	3.05	13.14	16.19	78.81
5.	नावानगर	17106	0.00	6.21	0.91	7.12	1.16	0.00	1.16	4.19	8.84	13.03	78.69
6.	पन्दह	15642	0.38	3.77	1.18	5.33	1.72	0.04	1.76	3.80	12.45	16.25	76.66
7.	मनियर	17079	1.02	13.26	0.91	15.19	1.49	0.01	1.50	4.47	17.26	21.73	61.58
8.	बेरूआरबारी	9049	0.28	6.23	1.87	8.38	2.73	0.00	2.73	1.48	12.02	13.50	75.39
9.	बाँसडीह	16071	0.30	5.51	0.91	6.72	2.68	0.00	2.86	0.73	20.02	20.75	69.85
10.	रेवती	19001	0.48	3.39	1.56	5.43	2.12	0.05	2.17	2.86	15.77	18.63	73.77
11.	गड़वार	14000	0.64	4.39	1.81	6.84	2.32	0.04	2.36	2.17	13.97	16.14	74.66
12.	सोहॉव	21450	0.25	4.23	2.11	6.59	1.21	0.01	1.22	3.26	23.24	26.50	65.69

13.	हनुमान गंज	14759	0.14	7.05	2.30	9.49	1.84	0.02	1.86	5.14	15.73	20.87	67.78
14.	दुबहड़	15164	0.15	16.35	1.63	18.13	1.06	0.00	1.06	6.32	13.86	20.18	60.63
15.	बेलहरी	14853	0.09	21.31	2.07	23.47	0.99	0.00	0.99	2.11	17.13	19.24	56.30
16.	बैरिया	14379	0.29	1.61	1.28	3.18	1.57	0.00	1.57	0.66	23.56	24.19	71.06
17.	मुरलीछपरा	16852	1.04	3.98	1.50	6.52	0.88	0.00	0.88	2.84	20.15	22.99	69.61
योग	ग्रामीण	294108	0.39	6.04	1.38	7.80	1.55	0.03	1.58	3.05	15.73	18.78	71.84
	नगरीय	5157	1.42	10.70	16.82	28.95	0.76	0.00	0.76	7.21	17.51	24.72	45.57
	जनपद	299265	0.40	6.12	1.64	8.16	1.54	0.03	1.57	3.13	15.76	18.89	71.38

स्रोतः सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बलिया 2017 के आधार पर शोधार्थी द्वारा आगणित

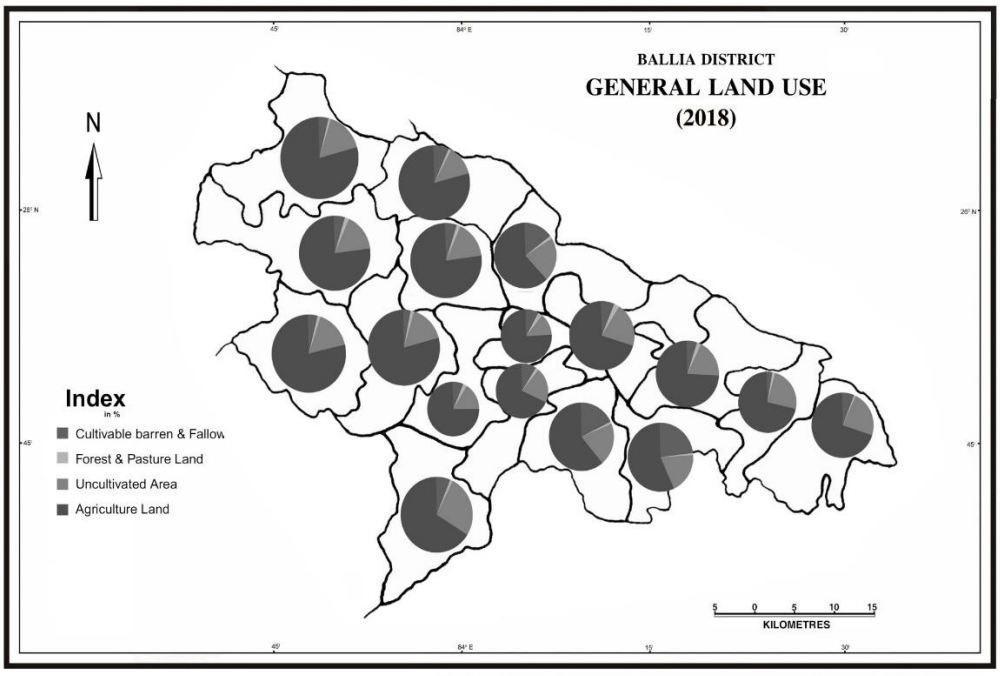

Fig.3

न्यूनतम प्रतिशत 3.18 प्रतिशत बैरिया विकास खण्ड में पाया जाता है। बेलहरी के अतिरिक्त दुबहड़ एवं मनियर में भी इसका प्रतिशत क्रमशः 18.13 प्रतिशत, एवं 15.19 प्रतिशत है इससे स्पष्ट है कि इन तीनों विकास खण्डों में बंजर एवं परती भूमि का विस्तार अधिकर है, जिसका उपयोग भविष्य में आवश्यकतानुसार कृषि, फलोत्पादन एवं अन्य उद्यमों की स्थापना में किया जा सकता है।

2. चारागाह एवं वनोद्यान–

इसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र में 1.58 प्रतिशत भूमि पायी जाती है। इसके क्षेत्रीय वितरण में लगभग समानता दिखायी नहीं देती है। क्योंकि इसका अधिकतम प्रतिशत 2.73 प्रतिशत बेरूआरबारी विकास खण्ड में तथा न्यूनतम प्रतिशत 0.88 मुरलीछपरा विकास खण्ड में प्राप्त होती है। इस भूमि का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से क्षेत्र की लगभग 30 प्रतिशत भूमि वनों चारागाहों एवं उद्यानों के रूप में होनी चाहिए। लेकिन जनपद के भूमि पर अधिक जनसंख्या भार के कारण खाद्यान्न की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जिससे सम्बन्धित भूमि कृषि कार्य के अन्तर्गत प्रयुक्त की जा रही है। परिणामस्वरूप जनपद में ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश एवं देश में इस संवर्ग की भूमि में निरन्तर ह्रास हो रहा है।

3. अकृष्य क्षेत्र (कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोगी की भूमि)–

इस भूमि के अन्तर्गत वह भूमि सम्मिलित है जिसका उपयोग कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों में किया गया हे। जैसे–आवास, निर्माण, खलिहान, खेल का मैदान, स्कूल, सड़क, रेलवे लाइन निर्माण आदि। अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण भागों में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के 18.78 प्रतिशत भाग पर यह भूमि विद्यमान है। इसके क्षेत्रीय वितरण में भी असमानता दृष्टिगत होती है। जिसका न्यूनतम प्रतिशत नावानगर विकास खण्ड में 13.03 प्रतिशत व अधिकतम 26.50 प्रतिशत सोहॉव विकास खण्ड में पाया जाता है। शेष विकास खण्ड इन दोनों विकास खण्डों के मध्य अपना–अपना स्थान बनाये हुए है। इस भूमि का उपयोग कृषि कार्य के लिए नहीं किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ अधिवास, सड़क एव नहर व सिंचाई सुविधाओं की स्थापना में निरन्तर वृद्धि होने से इसके प्रतिशत में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

4. कृषिकृत भूमि (शुद्ध कृषिकृत क्षेत्र)–

अध्ययन क्षेत्र में निरन्तर बढ़ती हुई जनंसख्या सिंचाई के साधनों के विस्तार, समतल ऊपजाऊ भूमि एवं अनुकूल मानसूनी जलवायु के बावजूद जनपद के कृषि परिक्षेत्र में –2.20 प्रतिशत का ह्रास हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण परिक्षेत्र के कुल 211285 हेक्टेयर भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 71.84 प्रतिशत भाग पर है। अध्ययन क्षेत्र की भूमि समतल एवं ऊपजाऊ होने के कारण कृषि कार्य अधिक होता है। अतः कृषिकृत भूमि का क्षेत्रफल सबसे अधिक सियर विकास खण्ड में 78.87

प्रतिशत भू–भाग पर पाया जाता है। जिसका अनुसरण चिलकहर 78.81 प्रतिशत नावानगर 78.69 प्रतिशत व रसड़ा 78.29 प्रतिशत विकास खण्ड करते है। जबकि विकास खण्ड स्तर पर सबसे कम शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल बेलहरी विकास खण्ड में 56.30 प्रतिशत पाया जाता है। जिसका अनुसार मनियर 61.58 प्रतिशत, दुबहड़ 60.63 प्रतिशत विकास खण्ड करते है। शेष सभी विकास खण्ड इन विकास खण्डों के मध्य अपनी–अपनी स्थिति धारण किये हुए है जो तालिका संख्या 2 व मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

भूमि उपयोग में परिवर्तन

तालिका संख्या 3 व मानचित्र संख्या 4के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सन् 1994–95 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 299265 वर्ग हेक्टेयर थी, जिसमें शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 220220 हेक्टेयर थी जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का सर्वाधिक 73.59 प्रतिशत था। जबकि कृषि योग्य बंजर भूमि 0.84 प्रतिशत, परती भूमि 7.41 प्रतिशत, ऊसर एवं कृषि कार्य के अयोग्य भूमि 4.59 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 11.8 प्रतिशत, चारागाह 0.20 प्रतिशत तथा उद्यानों, वृक्षों व झाड़ियों का क्षेत्रफल 1.57 प्रतिशत था। जो तालिका संख्या 3 व मानचित्र से 4से स्पष्ट है।

सन् 2004–05 में अध्ययन क्षेत्र के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 299265 हेक्टेयर में से शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 73.09 प्रतिशत, वन शून्य प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर भूमि 0.51 प्रतिशत, परती भूमि 6.51 प्रतिशत ऊसर एवं कृषि के आयोग्य भूमि 3.27 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 14.49 प्रतिशत, चारागाह 0.03 प्रतिशत तथा उद्यानों, वृक्षों व झाड़ियों का क्षेत्रफल 2.10 प्रतिशत था।

तालिका संख्या–4.3

बलिया जनपद : भूमि उपयोग प्रतिरूप

क्र. सं.	भूमि उपयोग	1994–95		2004–05		2016–17		परिवर्तन (प्रतिशत में) 1994–95 से 2015–16
		क्षेत्रफल (हे0 में)	प्रतिशत	क्षेत्रफल (हे0 में)	प्रतिशत	क्षेत्रफल (हे0 में)	प्रतिशत	
1.	शुद्ध कृषित क्षेत्र	220220	73.59	218743	73.09	213635	71.39	-2.20
2.	वन	0	0.00	0	0.00	81	0.03	0.03
3.	कृषि योग्य बंजर भूमि	2526	0.84	1520	0.51	1188	0.40	-0.44
4.	परती भूमि	22178	7.41	19468	6.51	23238	7.77	0.36
5.	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	13738	4.59	9787	3.27	9353	3.12	-1.47
6.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	35330	11.81	43360	14.49	47152	15.76	3.95
7.	चारागाह	586	0.20	93	0.03	98	0.03	-0.17

8.	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र	4687	1.57	6294	2.10	4520	1.51	-0.06
	जनपद	**299265**	**100.01**	**299265**	**100.00**	**299265**	**100.00**	**00.00**

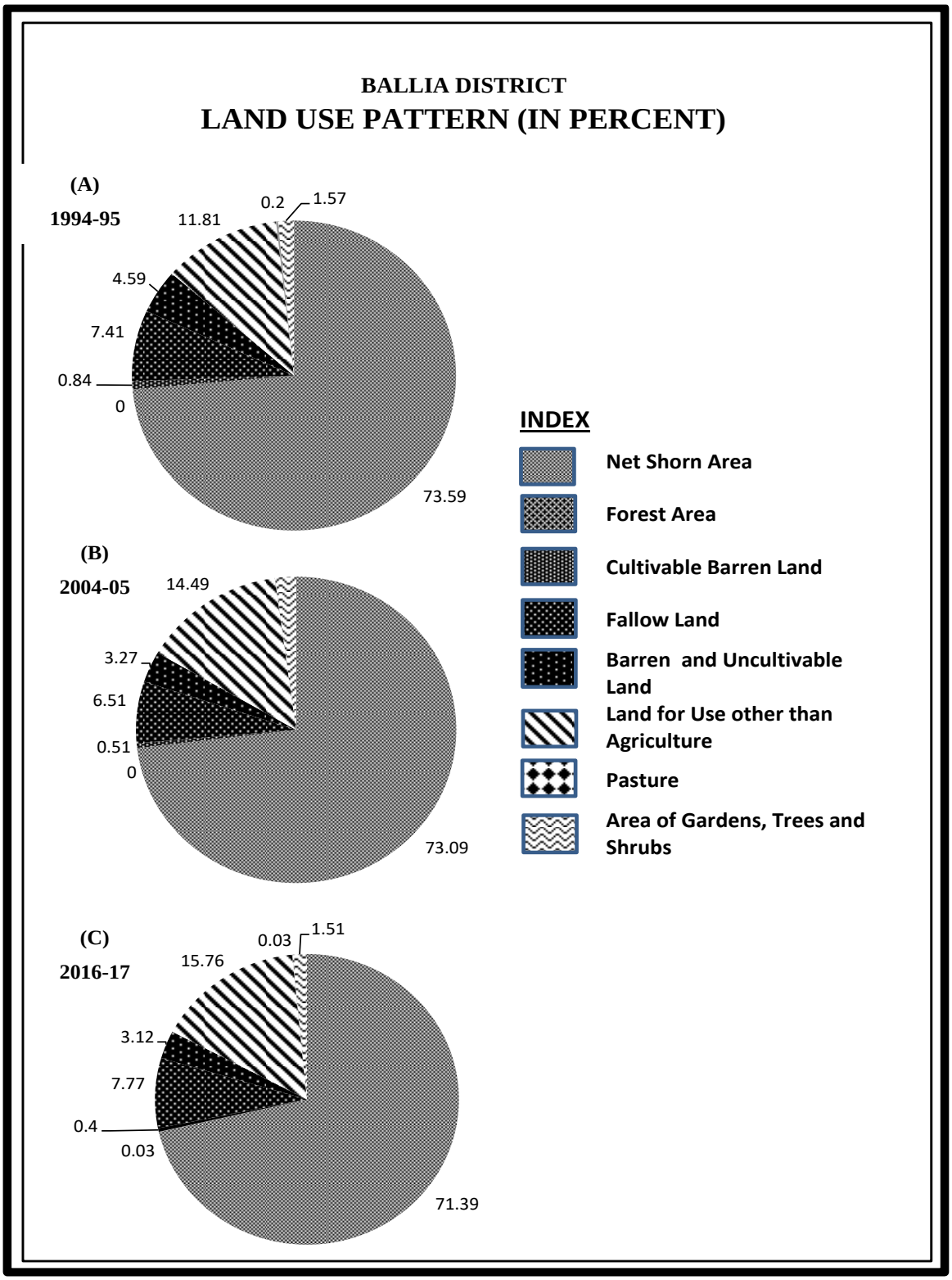

Fig – 4

सन् 2016–2017 में अध्ययन क्षेत्र के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 299265 हेक्टेयर में से शुद्ध बोया गयाक्षेत्रफल 71.39 प्रतिशत, वन 0.03 प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर भूमि 0.40 प्रतिशत, परती भूमि 7.77 प्रतिशत, ऊसर एवं कृषि के आयोग्य भूमि 3.12 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 15.76 प्रतिशत, चारागाह 0.03 प्रतिशत उद्यानों, वृक्षों व झाड़ियों का क्षेत्रफल 1.51 प्रतिशत है। जो तालिका सं0 3 व मानचित्र सं0 4से स्पष्ट है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 1994–95 से 2016–17 के दौरान अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रतिरूप के अंतर्गत शुद्ध कृषिकृत क्षेत्र में –2.20 प्रतिशत की कमी आयी, जबकि वन भूमि में 0.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं कृषि योग्य बंजर भूमि में –0.44 प्रतिशत की कमी हुई, जबकि परती भूमि में 0.36 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में –1.47 प्रतिशत की कमी हुई जबकि कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में 3.95 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं चारागाह भूमि में – 0.17 प्रतिशत की कमी हुई एवं उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्र में भी–0.06 प्रतिशत की कमी हुई है जो तालिका संख्या 3 से स्पष्ट हैं।

निष्कर्ष–

बलिया जनपद के भूमि उपयोग प्रतिरूप के गहन विवेचन से स्पष्ट होता है कि यहॉ शुद्ध बोया गया

क्षेत्र 71.38 प्रतिशत है, यह राष्ट्रीय औसत 46.48 एवं प्रदेश के औसत 68.93 प्रतिशत से अधिक है जो कृषिकार्य हेतु पर्याप्त है लेकिन यहॉ पर तथ्य उल्लेखनीय है कि वन व चारागाह का क्षेत्र एक प्रतिशत से भी कम हैजो चिंता जनक है उद्यान, बाग एवं झाड़ियों का क्षेत्र भी मात्र 1.51 प्रतिशत है यह भी मानक से काफी कम

है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जनपद की लगभग 8.16 प्रतिशत भूमि वर्तमान परती , अन्य परती एवं बंजरके अन्तर्गत है, जो किसी आर्थिक कार्य में प्रयुक्त नहीं होती है। जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि को देखते हुए अनुकूलता के अनुरूप इसे शुद्ध कृषित क्षेत्र मे ं परिवर्तित किया जा सकता है अथवा इस क्षेत्र में उद्यान व बागकी स्थापना की जा सकती है। इस कार्य हेतु मिट्टी के परीक्षण आरै उसकी विशेषताओं के अनुरूप उपचारित कर उद्यान व बाग के क्षेत्र में वृद्धि की जा सकती है क्योकि क्षेत्र के सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है के इस जनपद में उद्यान कृषि का विशेष महत्व है, जिसमें अमरूद, आवला, बेर, आम एवं पपीते की उद्यान कृषि की जासकती है यह जनपद पहले से ही अमरूद, आम, महुआ, कदम का थोडा बहुत उत्पादन होता है, जिसकी कृषि यहॉ के लोगो ं के लिए अधिक उपादेय होगी। इसके अतिरिक्त सिंचाई के साधनों में वृद्धि द्वारा द्वि–फसल भूमि को बढ़ाया जा सकता है, जिससे कुल उत्पादन में वृद्धि कर कृषकों की आर्थिक दशा को समुन्नत किया जा सकता है।

संदर्भ

1. Chauhan, D. S. (1966) Studies in the Utilization of Agricultural Land , Shival & Company, Agra.
2. Warlow,R and Jonson (1954): " Land Problems and Politics", Mc Graw Hill Book company , New York.
3. Ibid
4. Kariel, H. G. & Kariel, P. E(1972) : "Explanation in social Geography" Addison welseley Publishing
5. Company,P.172.
6. Singh B. B. (1979):, "Agricultural Geography", Rana Publication, Varanasi P. 105.
7. Stomp L. D. (1931): " The Land Utilization Survey of Britain ", Geographical Journal, 78, P. 40.
8. Shafi, M. (1960), "Land Utilization of Eastern U. P.", Aligarh University Aligarh.
9. Bhatia, S. S. (1965): " Patterns of Crop Combination ad Diversification in India.", Economic Geogaphy, P. 41